International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232
Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 4; Issue 2; March 2018; Page No. 16-17

हिन्दी नारों में प्रतिबिंबित सांप्रदायिक सद्भावना

विद्या पी वेणुगोपाल [1], डॉ. के. जयलक्ष्मी [2]
[1] शोध छात्रा, भाषा विभाग, एसएसएल, वी आई टी, वेल्लोर तमिलनाडु, भारत।
[2] सहायक प्रोफेसर, (वरिष्ठ) भाषा विभाग, एसएसएल, वी आई टी, वेल्लोर, तमिलनाडु, भारत।

प्रस्तावना

हमारा है एक ही नारा
भाईचारा भाईचारा

सांप्रदायिक सद्भावना या सर्वधर्म समभाव की झलक एकदम उपर्युक्त नारे में दिखाई दे रही है। चाहे हमारे धर्म, जाति, संप्रदाय, संस्कृति आदि अलग हो फिर भी सम्पूर्ण मानव जाति को एक बंधन में जोड़नेवाला भाव है भाईचारे का भाव। भाईचारे का भाव एक ऐसा अखंड भाव है जो विश्व शांति को कायम रखने केलिए अनिवार्य है। शांति को बनाए रखना हर एक इनसान का धर्म है। इसी कारण से शांति को मानव-धर्म बताया गया है और इसकी प्रमुखता नीचे दिये नारे में बिलकुल स्पष्ट है –

शांति मानव का धर्म है, अशांति अधर्म है

यह नारा भी कितना संक्षिप्त एवं प्रभावशाली है। नारों की विशिष्टता भी यही है कि नारे प्रभावोत्पादक हैं और दिलों पर आसानी से छा जाते हैं और जीत दिलाने में भी सक्षम हैं। खुद विकास पांडे जी (बीबीसी मोनिटरिंग) के शब्दों में देखिए-

नारा ऐसा जो दिलों पर छाए और जीत दिलाए

राजनैतिक, वाणिज्यिक, धार्मिक, सांप्रदायिक और अन्य संदर्भों में किसी विचार या उद्देश्य को बारंबार अभिव्यक्त करने केलिए प्रयुक्त एक यादगार आदर्श-वाक्य या सूक्ति ही नारा कहलाता है। अंग्रेजी में इसका शाब्दिक अर्थ 'Slogan' है। इसकी आसान बयानबाज़ी प्रकृति ही इसकी सबसे बड़ी विशेषता है और इसी कारण से यह कभी भी विस्तृत विवरणों की कोई गुंजाइश ही नहीं छोड़ती है। जन-जन तक इसकी पहुँच होती है। इसको साहित्य की विधा नहीं माना जा सकता है, क्योंकि यह साहित्य की विभिन्न विधाओं से लिया गया एक अंश मात्र है। जैसे कि किसी महान रचनाकारों की रचनाओं से इसको लिया जा सकता है, कविताओं या कहानियों से भी। ऐसे लिए जानेवाली उक्ति या महान लोगों द्वारा बोले जानेवाले कथन ही नारा कहलाता है। कुछ नारे ऐसे हैं जो गीतों से लिए जाते हैं। उदाहरण केलिए 'वन्दे मातरम्'। यह एक नारा मात्र न होकर भारत का राष्ट्रगीत भी है। कुछ नारे आम जनता को प्रेरित एवं जागृत कराने के उद्देश्य से लिखे जाते हैं। सांप्रदायिक दंगों से जब लोग कुचल जाते हैं तब एकता और भाईचारे के महत्त्व से लोगों को अवगत कराने में नारे बहुत काम आते हैं।

दुनिया में विभिन्न प्रकार के लोग रहते हैं। उनके सोच-विचार, विश्वास, सभ्यता, संस्कृति आदि एक दूसरे से बिलकुलल भिन्न हैं। इसी अनेकता के बावजूद एकात्मकता का भाव ही मानवजाति को जोड़ने वाला प्रमुख तत्त्व है। मगर जब एकातमकता नष्ट हो जाती है तब समाज विभाजित होने लगता है। सांप्रदायिकता का जन्म भी तभी होता है जब विभिन्न विचारवालों के बीच में परस्पर सम्मान का भाव कम होने लगता है। हर एक इनसान का या समुदाय का रहन-सहन, भाषा, खान-पान, सोच-विचार, विश्वास आदि एक दूसरे से बिलकुल अलग होता है। जब तक इन विभिन्न विचारवालों के बीच में परस्पर आदर का भाव होता है तब सांप्रदायिक संघर्ष की गुंजाइश ही नहीं होती है। जब इनमें से कोई अपने विचारों को उत्कृष्ट और दूसरों के विश्वास या विचारों को निकृष्ट मानने लगता है तभी समस्या आने लगती है। कुछ लोग इन्हीं रहन-सहन, पूजा-पाठ-उपासना-विधियों, खान-पान को धर्म का आधार मान लेते हैं। ऐसे लोगों केलिए धर्म का अर्थ बहुत सीमित है। वास्तव में धर्म का अर्थ इतना सीमित नहीं है बल्कि इसका अर्थ व्यापक है।

लेखक अनिरुद्ध जोशी 'शतायु' के शब्दों में धर्म का अर्थ समझने की कोशिश करें। हिंदू, जैन, बौद्ध, यहूदि, ईसाई, इस्लाम और सिख को बहुत से लोग धर्म मानते हैं। इन सबके अपने अलग-अलग धार्मिक ग्रंथ भी हैं। धर्म ग्रंथों में सचमुच ही धर्म की बाते हैं*?* पढ़ने पर पता चलता है कि इतिहास है, नैतिकता है, राजनीति है, युद्ध है और ईश्वर तथा व्यक्ति विशेष का गुणगान।[१] ('आखिर धर्म क्या है*?':* अनिरुद्ध जोशी 'शतायु') लेखक ने अपने लेख 'आखिर धर्म क्या है' में धर्म का वास्तविक अर्थ समझने की कोशिश की है।

धर्म का वास्तविक अर्थ है 'कर्तव्य'। हर एक मानव का खुद के प्रति एवं जिस समाज में वह रहता है उस समाज के प्रति एक कर्तव्य होता है। इसका मतलब यह है कि समाज में रहनेवाले लोगों के प्रति हम सब प्रतिबद्ध है। एक इनसान का जीवन तभी सार्थक होगा जब वह दूसरों के विचारों का सम्मान कर उनके कल्याण केलिए काम करे। तो अपनी आत्मा की खोज और कर्तव्यों की पूर्ति को ही सही अर्थों में धर्म कहा जा सकता है। अगर हम धर्म का संबंध ईश्वर से मानते हैं तो किसी भी ईश्वर ने किसी के विरुद्ध सोचने या काम करने को नहीं कहा है। क्योंकि जिन्हें हम ईश्वर मानते हैं वे भी एक समय जीवित मानव ही थे। उनके ऊँचे विचार और संस्कारों ने ही उन्हें ईश्वर-तुल्य बनाया था। मगर अज्ञानी लोग इन्हीं भगवानों के नाम पर जब झगड़ते हैं तभी सांप्रदायिक संघर्ष पैदा हो जाता है। जब ऐसे सांप्रदायिक दंगे फूट पड़ते हैं तभी लेखकों को अपनी लेखनी चलानी पड़ती है और उनके द्वारा अज्ञान एवं सुप्त लोग जागृत हो पड़ते हैं। ऐसे अवसरों

पर नारों का बड़ा काम आता है। सांप्रदायिक सद्भावना पर लिखे गए ऐसे कुछ नारों पर अब प्रकाश डाला जाय।

जात–पात के बंधन तोड़ो, भारत जोडो भारत जोडो

इस नारे का आधार वास्तव में सांप्रदायिक सद्भावना के सद्गुरु एवं हिन्दी साहित्य के सशक्त एवं समाजसुधारक कवि संत कबीरदास की वाणी है। कबीर ने अपने दोहों के द्वारा सर्वधर्म सद्भावाना की अनिवार्यता पर बहुत बार आवाज़ उठा चुकी है। दोहा कुछ इस प्रकार है-

जाति-पांति पूछे नहिं कोई,
हरि को भजे सो हरि का होई।

डॉ॰ नज़ीर मुहम्मद के शब्दों में संत कबीरदास सांप्रदायिक सद्भाव के आदर्श सद्गुरु हैं। उनके ही शब्दों में देखिए- 'संतों में शिरोमणि कबीर दास भारतीय धर्म निरपेक्षता के आधार पुरुष हैं। संत कबीर एक सफल साधक, प्रभावशाली उपदेशक, महान नेता और युग-द्दष्टा थे। उनका समस्त काव्य विचारों की भव्यता और हृदय की तन्मयता तथा औदार्य से परिपूर्ण है।[१] (सांप्रदायिक सद्भाव के आदर्श गुरु कबीरदास: डॉ॰ नज़ीर मुहम्मद)

सभी धर्म की एक पुकार, एकता को करो साकार

कितने प्रभावशाली है ये नारे। बिलकुल ठीक ही कहा गया है। दुनिया में जितने धर्म, जाति, संप्रदाय हैं उन सब की एक ही पुकार है एकता। एकता ही मानव-कल्याण का आधारभूत तत्त्व है। इसके बिना विश्व-शांति का सपना साकार नहीं हो पाएगा।

अनेकता में एकता यही भारत की विशेषता

यह नारा भारतीय संस्कृति की विशेषता एवं सर्वधर्म समभाव की ओर इशारा कर रहा है। भारत की यही विशिष्टता उसे अनोखा एवं आदर्श देश बना देती है। पूरी दुनिया में इसी कारण से भारत की शान चारों ओर फैला है। फिर भी कभी-कभी धर्म, जाति आदि के नाम पर जब संघर्ष हो जाते हैं तब सर्वधर्म समभाव पर नारे लिखे जाते हैं जिनके द्वारा फिर से भाईचारे एवं एकता की स्थापना करने की कोशिश की जाती है। हिन्दू और मुसलमानों के बीच एकता स्थापित करने केलिए लिखे गए नारा ज़रा देखिए-

'ह' से हिन्दू, 'म' से मुसलमान और हम से सारा... हमारा हिंदुस्तान.

सांप्रदायिक सद्भावना के इस ऊँचे विचार से लोगों को मिलकर रहने की प्रेरणा मिलती है।

देश हमारा हिंदुस्तान, रखेंगे हम उसकी शान

हमारा आदर्श देश हिंदुस्तान की शान सदा बनाए रखने की आवश्यकता की ओर इशारा है। हमेँ अपने देश की शान को बनाए रखने के साथ साथ सार्वभौमिक भाईचारे को भी कायम रखना चाहिए क्योंकि वही हमारी संस्कृति है। देखिए-

विश्व स्नेह का ध्यान करे, सबका सब सम्मान करे

सांप्रदायिक सद्भावना के ये नारे हमेशा अपनी ज़ुबान पर गूँजते रहे क्योंकि शांति की स्थापना ही मानव का सबसे बड़ा धर्म है। अंबेदकरजी के कथन हमेशा अपनी याद में रहे-

मैं ऐसे धर्म को मानता हूँ जो स्वतंत्रता, समानता और भाईचारा सिखाए !

संदर्भ

1. आखिर धर्म क्या है?': अनिरुद्ध जोशी 'शतायु'
2. सांप्रदायिक सद्भाव के आदर्श गुरु कबीरदास: डॉ॰ नज़ीर मुहम्मद
3. कबीर के दोहे